नाम - डॉ० सुजाता गुप्ता दिनांक - 29.05.2020

विभाग - हिंदी

वर्ग - इंटरमीडिएट 11th

शीर्षक :- 'पूस की रात' कहानी का सारांश

लेखक - प्रेमचंद

'पूस की रात' कहानी (प्रेमचंद) का सारांश

किसान और मजदूर - दोनों ही श्रमिक और दोनों ही लाचार। प्रेमचंद की यह कहानी 'पूस की रात' (बहुत ठंडी रहती है) जिसमें हल्कू नामक किसान, जाड़े की रात में खेत की रखवाली करता है। ऐसी ठंड जिसमें बिना कंबल के रातभर खेत में लगी फसल की रखवाली करना भी एक दुस्सहाय कार्य है। वह रात में खेतों में लगी फसल रखवाली करता था। उसने बिजली के लिए भी कर्ज लिया था। हल्कू अपनी पत्नी के साथ रहता था। दूसरे की जमीन पर खेती करने के कारण खुद नहीं बचता था, उसकी पत्नी हमेशा उसे मजदूरी करने को कहती थी। खेत के मालिक का लगान बकाया रहता था, उसे चुकाने को उसने अपनी पत्नी से तीन रुपए मांगे थे। लेकिन उसकी पत्नी उसे वे तीन रुपए देने से मना कर देती है, क्योंकि वो रुपए उसने जाड़े में कंबल खरीदने के लिए रखा था। बहुत मुश्किल से उसने वो रुपए जोड़कर रखे थे, "तीन ही तो रुपये हैं, दे दोगे तो कम्मल कहाँ से आवेगा? माघ पूस की रात हार में कैसे कटेगी? उससे कह दे, फसल पर दे देंगे। अभी नहीं।" मगर हल्कू नहीं माना और गाली तथा अपशब्द का भय दिखाकर, मुन्नी को रुपए देने ही पड़े। मुन्नी उसे खेती छोड़ मजूरी करने को कहती है, जिसमें उसे किसी

Scanned with CamScanner

की धौंस तो नहीं मिलेगी। पूस की सर्द हवाओं की सुइयाँ चुभोती रात, तो और अधिक भयावह होती है। पछुआ हवाओं से सर्द होता वातावरण, आसमान में तारे भी ठिठुरते हैं और एक लंबी अंतहीन रात होती है, पूस की रात। हल्कू अपनी पुरानी चादर में ठिठुरता रहता है। पास ही उसका संगी कुत्ता जबरा पेट में कूँ-कूँ कर रहा था। हल्कू ने जबरा को अगले दिन से ना आना को कहता है। और फिर कई बार चिलम पीने भी उठता है। इतनी अधिक हाड़ कंपानेवाली ठंड में तो उसे नींद ही नहीं आती है। वह इस करवट लेटता है, तो कभी उस करवट, मगर जाड़ा एक पिशाच की भाँति उसकी छाती को दबाए रहता है। उसने अपनी संगी कुत्ते को अपने शरीर से चिपटा लिया, ताकि उसे थोड़ी गर्माहट मिल सके। अंतत: जब उससे नहीं रहा गया तो बाहर पड़ोस के खेत से सूखे पत्तों को उखाड़कर आग जलाई और कुत्ते के साथ उस गर्माहट का मजा लेने लगा। थोड़ी ही देर में उसे नींद आ गई। इसी बीच खेत में नीलगायों का झुंड आकर सारी फसल बरबाद करने लगे। जबरा आभास होते ही भौंकना शुरु करता है, मगर अब हल्कू नींद के आगोश में। यह जानने पर कि खेतों में नीलगायों का झुंड घुस आया है, हल्कू उस गर्माहट को नहीं छोड़ना चाहता था। खेत के चरे जाने की आहट मिलने के पश्चात भी, अपनी जगह से हिलना जहर लग रहा था। इस जाड़े में ठंड के कारण जानवर के पीछे दौड़ना उसे असह्य लगा। वैसे ही उठकर दो-तीन कदम बढ़ा, मगर ठंड अत्याधिक होने कारण वह फिर अलाव पास बैठकर गर्माहट लेने लगा। इधर नीलगायों ने पूरी फसल चौपट कर दी। सुबह जब उसकी पत्नी मुन्नी ने उसे जगाकर बताया कि पूरा खेत का सत्यानाश हो गया है। खेत की दशा को देख मुन्नी उदास थी कि अब मजदूरी करके मालगुजारी देनी होगी, मगर हल्कू प्रसन्न था कि अब उसे खेत में सोना नहीं पड़ेगा!

Scanned with CamScanner